RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

पॉपुलर संस्कृति का स्वरूप

Sujeet Kumari

M.A. Hindi (UGC- NET)

संस्कृतिमूलक अध्ययन पद्धति की मूल प्रस्तावना है कि यह संस्कृति, समाज, भाषा और अस्मिता के साथ दूसरे कई सवालों को किसी एक नियामक या विधा से जोड़कर देखने के बजा य इसके बहुआयामी संदर्भों का विश्लेषण करती है ।[1] यही कारण है कि यह उन तमाम मान्यताओं और अवधारणाओं को या तो ख़ारिज करता है या फिर पुनर्विश्लेषण की बात करता है जो किसी एक आधार या दृष्टिकोण को लेकर स्थापित कि ये ग ये हैं। ऐसा इसलिए भी है कि संस्कृतिमूलक अध्ययन पद्धति किसी भी संदर्भ में एक निश्चित निष्कर्ष देने के बजाय इससे जुड़ी उन मान्यताओं को सामने लाने की कोशिश करता है जो कि विश्लेषण के क्रम में प्रस्तुत किये गये हों। यह बहुआयामी , बहुअनुशासनात्मक अध्ययन पद्धति है जिसका उद्देश्य निष्कर्ष की अवधारणा पैदा करने के बजाय बहुआयामी संदर्भों और दृष्टिकोणों को लेकर विमर्श पैदा करना है। अध्ययन पद्धति के इसी रूप को जॉन स्टोरे ने लोकतांत्रिक परियोजना (democratic project) कहा है। स्टोरे के अनुसार यह मैथ्यू आर्नल्ड की उस मान्यता से बि ल्कुल अलग है जिसमें जो सबसे बेहतर सोचा गया है और सबसे बेहतर कहा गया है, केवल उन्हीं के अध्ययन किये जाएँ।[2] मैथ्यू आर्नल्ड की इस विश्लेषण पद्धित में किसी दूसरी मान्यता को स्वीकार करने के बजाय पहले से चली आ रही मान्यता को ही बिना तार्किक विश्लेषण के और मजबूत किया जाता रहा। नये दृष्टिकोण को किसी भी स्तर पर स्वीकार करने और शामिल करने की कहीं कोई गुंजाइश नहीं बनने दी गयी। पहले से ही सबसे बेहतर मान लिए जाने के कारण बाद के तमाम विचारों और बदलावों को नकारात्मक और ग़ैर-ज़रूरी मान लिया गया। संस्कृति की व्याख्या करने के क्रम में रेमंड विलियम्स सहित बाद के दूसरे संस्कृति समीक्षकों ने मैथ्यू आर्नल्ड की इस मान्यता को ख़ारिज करते हुए नयी प्रस्तावना दी। बाद में भी जॉन स्टोरे सहित हेबडिगे, एम सी रॉबी, डॉमिनिक सट्रीनाती, अमबर्तो, जॉन ए वीवर, फ्रेड्रिख़ जेमेसन सहित दर्ज़नों समीक्षकों ने मैथ्यू आर्नल्ड की उन तमाम मान्यताओं पर सवाल खड़े किये जो किसी एक विधा या स्थिति को लेकर निष्कर्ष के तौर पर यह स्थापना ही थी कि- जो बेहतर है वह खोजा जा चुका है, उसमें संदेह करने की कोई गुंजाइश नहीं है, अब सिर्फ़ इसकी व्याख्या करने की ज़रूरत है , इसे हमेशा के लिए बचा ये रखने की ज़रूरत है।[3] आर्नल्ड ने 'बेस्ट') best) को परिभाषित भी किया और उसे निरंतर बना ये रखने की भी बात कही और उपाय बताए। इसके ठीक विपरीत संस्कृतिमूलक अध्ययन पद्धति के तहत विश्लेषण के क्रम में एक ही साथ कई विधाओं, विषयों, अवधारणाओं, वस्तु एवं जीवन शैली को शामिल किये जाने की अनिवार्यता को बुनियादी तौर पर स्वीकार किया गया। इसके पीछे आलोचकों की मान्यता रही कि संस्कृति, समाज, भाषा और अस्मिता की निर्मिति एक काल खंड विशेष में न होकर निरंतर चलती रहती है। ऐसा नहीं होता कि एक बार इनका निर्माण हो जाता है और वही बाद में किसी और तरह की निर्मिति की ज़रूरत नहीं होती। इस क्रम में रेमंड विलियम्स ने मैथ्यू आर्नल्ड की मान्यता से बिल्कुल अलग संस्कृति को विश्लेषित किया। विलियम्स ने संस्कृति को एक जीवन पद्धति बताया जिसमें कि निरंतर बदलाव की गुंजाइश बनी रहती है। इसके अर्थ न केवल किसी कला या संस्थान के संदर्भ में होते हैं बल्कि सामान्य व्यवहार में भी होते हैं।[4] विलियम्स की संस्कृति की इस नयी व्याख्या ने संस्कृति को एक प्रवाहमान और बहुविध प्रक्रिया के तौर पर देखने - समझने की गुंजाइश पैदा की। बाद के आलोचकों ने इसे औ र भी स्पष्ट करते हुए लिखा कि - किसी भी समाज या संस्कृति की निर्मिति के पीछे कोई एकहरी प्रक्रिया काम नहीं कर रही होती है कि उसे किसी एक ख़ास प्रविधि के तहत विश्लेषित कर दिये जाएँ। इसमें मानवीय व्यवहार , साहित्य, मनोविज्ञान, भूगोल, अर्थ, राजनीति और दूसरे कई संदर्भ काम कर रहे होते हैं। किसी एक विधा से जुड़े व्यक्ति को इस बात की आ ज़ादी है कि वह चाहे तो उसे सिर्फ़ अपने विषय के अनुसार विश्लेषित कर दे और एक स्वतंत्र अध्ययन क्षेत्र विकसित कर ले। लेकिन यह दावा नहीं कर सकता कि संस्कृति का मतलब इनमें से कोई एक ही है।[5]

[1]. culture is bound up with both forms, like film or sports and discourses it is both a space of interpretation and debate as well as subject matter and domain of inquiry. सं- डगलस एम. केलनर,मीनाक्षी गिगि दुर्हम(2006) मीडिया एंड कल्चरल स्टडीज स्टडीज,पेज नं-x,ब्लैकबेल पब्लिशिंग लि.,350 मेनस्ट्रीट,मालदेन,एम ए 2148-5020,यूएसए)।

[2] it is a "democratic" project in the sense that rather than studying only what Matthew Arnold called "the best which has been thought and said"(1960:6),cultural studies is committed, in principle to examining all that has been thought and said. जॉन स्टोरे(2003) इन्वेंटिंग पॉपुलर कल्चर फ्रॉम फोक्लॉर टू ग्लोबलाइजेशन,पेज नं-(ix),ब्लैकबेल पब्लिशिंग।

[3] The best which has been said and thought. मैथ्यू ऑर्नाल्ड)1960(,कल्चर एंड एनार्की ,पेज नं-6 कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस,कैम्ब्रिज

[4] रेमंड विलियम्स(1961) दि लॉग रेव्युलेशन,पेज-36,रॉउटलेज लंदन)

[5] These include literature, literary criticism, history and psychoanalysis, as well as sociology. The inter-disciplinary character of this process and the intellectual cross-fertilisation it has entailed have proved useful

RRIJM 2015, All Rights Reserved

संस्कृतिमूलक इस अध्ययन पद्धति के विस्तार का परिणाम यह हुआ कि एक ही विषय और सवाल को लेकर कई दृष्टिकोणों से चर्चा शुरू हुई , स्थापनाओं के बजाय उसकी बहुलता पर ध्यान दिया जाने लगा। संस्कृति, भाषा, समाज और अस्मिता के सारे सवालों को इसी बहुलकता के बीच रखकर विमर्श शुरू हुए। इस पद्धति के आधार पर जिन सवालों पर सबसे ज़्यादा विमर्श हुआ उनमें से एक स्वयं संस्कृति भी है। संस्कृति का संबंध किसी न किसी रूप में उन सारी अवधारणाओं और विचारों से रहा है जिसके तहत विश्लेषण की प्रक्रिया शुरू की गयी। प्लेटो भी जब अपनी कृति, द *रिपब्लिक* में चित्रकला और कविता के संबंध में विचार करते हैं और उसे सत्य और असत्य के आधार पर स्वीकार करने की बात करते हैं। ऐसा करके वह भी किसी न किसी रूप में संस्कृति और उनके चिह्नों का ही विश्लेषण करते हैं। जॉन . ए.वीवर का मानना है कि संस्कृति को यहीं से देखा -समझा जा सकता है। इतना ही नहीं प्लेटो ने कविता और चित्रकला को ख़ारिज करने के पीछे जो तर्क दिये , वे सारे तर्क संस्कृति और पॉपुलर संस्कृति को अलग करने की है। जब हम वीवर के अनुसार जो सबसे बेहतर है , वह सोचा और लिखा जा चुका है की आलोचना करते हैं तो यह बात आसानी से समझ में आ जाती है कि क्रमबद्ध रूप से यह मान्यता भले ही आर्नल्ड ने स्थापित की हो लेकिन उसके संकेत पहले भी मौजूद रहे हैं। प्लेटो की द *रिपब्लिक* में इसके संदर्भ मौजूद हैं। [6] यानी संस्कृति में सबसे बेहतर और सबसे बेकार (जिसे की प्लेटो ने decisive things यानी भरमाने वाली चीज़ें कहाँ हैं) के आधार पर विश्लेषण करने की एक लम्बी पर म्परा रही है और इसी के आधार पर निष्कर्ष भी दिये गये हैं। संस्कतिमूलक अध्ययन पद्धति उन सारे निष्कर्षों को अपने विमर्श में शामिल करते हुए नये तर्क प्रस्तुत करता है। इसलिए पॉपुलर संस्कृति को लेकर जैसे ही हम विश्लेषण करते हैं , हमें उन सारे विश्लेषणों और स्थापनाओं से से होकर गु ज़रना होता है जिसमें कि संस्कृति को एक स्थापित रूप देने की कोशिश की गयी। साथ ही संस्कृति के निर्धारण का काम किया गया और संस्कृति के भीतर शामिल करने और ख़ारिज करने की योजना चला ई गयी। इसके बाद के विमर्शों में संस्कृति को किस रूप में देखा गया , संस्कृति को किसी एक मान्यता के आधार पर विश्लेषित करने के बजाय कई घटकों के समुच्चय के रूप में परिभाषित किया गया, इन सबकी जानकारी मिल सकेगी।

in establishing this area of study and in fostering conceptual innovations, empirical research and theoretical disputes. डॉमिनिक स्ट्रीनॉती(2006), एन इन्ट्रोडक्शन टू दि थ्योरीज ऑफ़ पॉपुलर कल्चर, पेज नं(XIV),राउटलेज 270 मेडिसन एवन्यू,न्यू ऑर्क,10016)

[6] It is Plato's quest to ban poets and painters from the Republic that marks the first attempt to demarcate between Culture and Popular culture.जॉन.ए.वीवर. (2005),पॉपुलर कल्चर प्राइमर, पेज नं-3 पीटरलांग पब्लिशिंग,275 सेवेंथ एवन्यू,28 वां तल, न्यूयार्क,10001